

**उपेक्षणीय वि.** (तत्.) 1. उपेक्षा करने योग्य, घृणा करने योग्य 2. त्यागने योग्य।

**उपेक्षा स्त्री.** (तत्.) 1. उदासीनता, अवहेलना 2. घृणा, तिरस्कार 3. लापरवाही 4. योग की एक वृत्ति, अनासक्ति टि. अन्य वृत्तियाँ-मुदिता, मैत्री, करुणा।

**उपेक्षित वि.** (तत्.) जिसकी उपेक्षा की गई हो, तिरस्कृत।

**उपेक्ष्य वि.** (तत्.) 1. जिसके प्रति लापरवाही हो रही हो 2. उपेक्षा के योग्य।

**उपेत वि.** (तत्.) 1. समीप आया हुआ 2. मिला हुआ, प्राप्त 3. युक्त, संपन्न।

**उपेय वि.** (तत्.) 1. जो उपाय करने से साध्य हो सकता है 2. प्राप्त करने योग्य, प्राप्तव्य।

**उपोत्पाद [उप+उत्पाद] पुं.** (तत्.) वाणि./रसा. किसी वस्तु के उत्पादन की प्रक्रिया में उत्सर्जित गौण उत्पाद, जिन्हें स्वतंत्र रूप से इस्तेमाल किया जा सकता है, जैसे- चीनी बनाते समय निकला शीरा। by product

**उपोद वि.** (तत्.) 1. संचित 2. निकट लाया हुआ 3. शुरू किया हुआ 4. युद्ध के लिए तैयार 5. विवाहित।

**उपोद्घात पुं.** (तत्.) 1. किसी पुस्तक के आरंभ का वक्तव्य, भूमिका 2. नव्य न्याय में छह संगतियों में से एक।

**उपोषण पुं.** (तत्.) 1. उपवास, निराहार रहने का भाव 2. व्रत करने का भाव।

**उपोषित वि.** (तत्.) जिसने उपवास किया हो दे. उपोषण।

**उपोसथ पुं.** (तद्.+उपवसथ) पालिभाषा का शब्द, बौद्ध. विशिष्ट तिथियों पर होने वाली बौद्धों की सभा।

**उप्त वि.** (तत्.) बोया हुआ।

**उप्ति स्त्री.** (तत्.) बोलने की क्रिया या भाव।

**उप्पर क्रि.वि.** (तद्.) ऊपर।

**उप्य वि.** (तत्.) 1. बोलने योग्य 2. जिसे बोना हो।

**उफ पुं.** (अ.) दुख, पीड़ा, पछतावा आदि उद्गार का सूचक, आह मुहा. उफ तक न करना -मुँह से आह तक न निकलना, पीड़ा को पी जाना, पीड़ा को व्यक्त न करना।

**उफनना अ.क्रि.** (तत्.) 1. उबलना, तापन के कारण फेन सहित उबाल आना 2. क्रोध में आना 3. ला.अ. नदी के जल का तटों से बाहर जाकर तीव्रगति से बहना।

**उफान पुं.** (तद्.) 1. किसी वस्तु का गर्मी पाकर फेन सहित ऊपर उठना 2. जोश खाना 3. उठना, उबाल।

**उंबर/उंबुर पुं.** (तत्.) द्वार के चौखट की ऊपर वाली लकड़ी।

**उबकना अ.क्रि.** (देश.) कै करना, उलटी करना, वमन करना।

**उबका पुं.** (तद्.) 1. मुक्त 2. बचा हुआ, अवशिष्ट 3. जिसका उद्धार हो गया हो।

**उबकाई स्त्री.** (देश.) उलटी, कै, मतली।

**उबकावनी वि.** (तत्.) कै जैसी, उलटी करने जैसी, मतली आने जैसी।

**उबटन पुं.** (तद्.) शरीर पर मलने के लिए सरसों, तिल और चिरौंजी आदि को पीस कर बनाया गया लेप।

**उबटना अ.क्रि.** (तद्.) उद्धार पाना, मुक्त होना 2. छूटना, बचना 3. शेष रहना।

**उबरना अ.क्रि.** (तद्.) 1. उबटन लगाना, उबटन आदि की मालिश 2. ददोरा पड़ना, चोट से शरीर पर निशान लगना 3. पलटना।

**उबरे वि.** (तद्.) सबल बिलो. दुबरे।

**उबलना अ.क्रि.** (तद्.) 1. उफनना, खौलना, ऊपर की ओर जाना 2. जोश खाना, अति क्रोधित होना, आपे से बाहर होना 3. उमड़ना।

**उबसन पुं.** (तद्.) बरतन माँजने में काम आने वाला मूठा, जूना, जो घास-पात, नारियल के रेशे आदि से बना होता है।